♦♦♦ "अहम्" काव्य-श्रृंखला भाग-1 ♦♦♦

खुद से खुद की बात है

अकेला होता हूँ मैं जब, खुद के साथ होता हूँ मैं तब

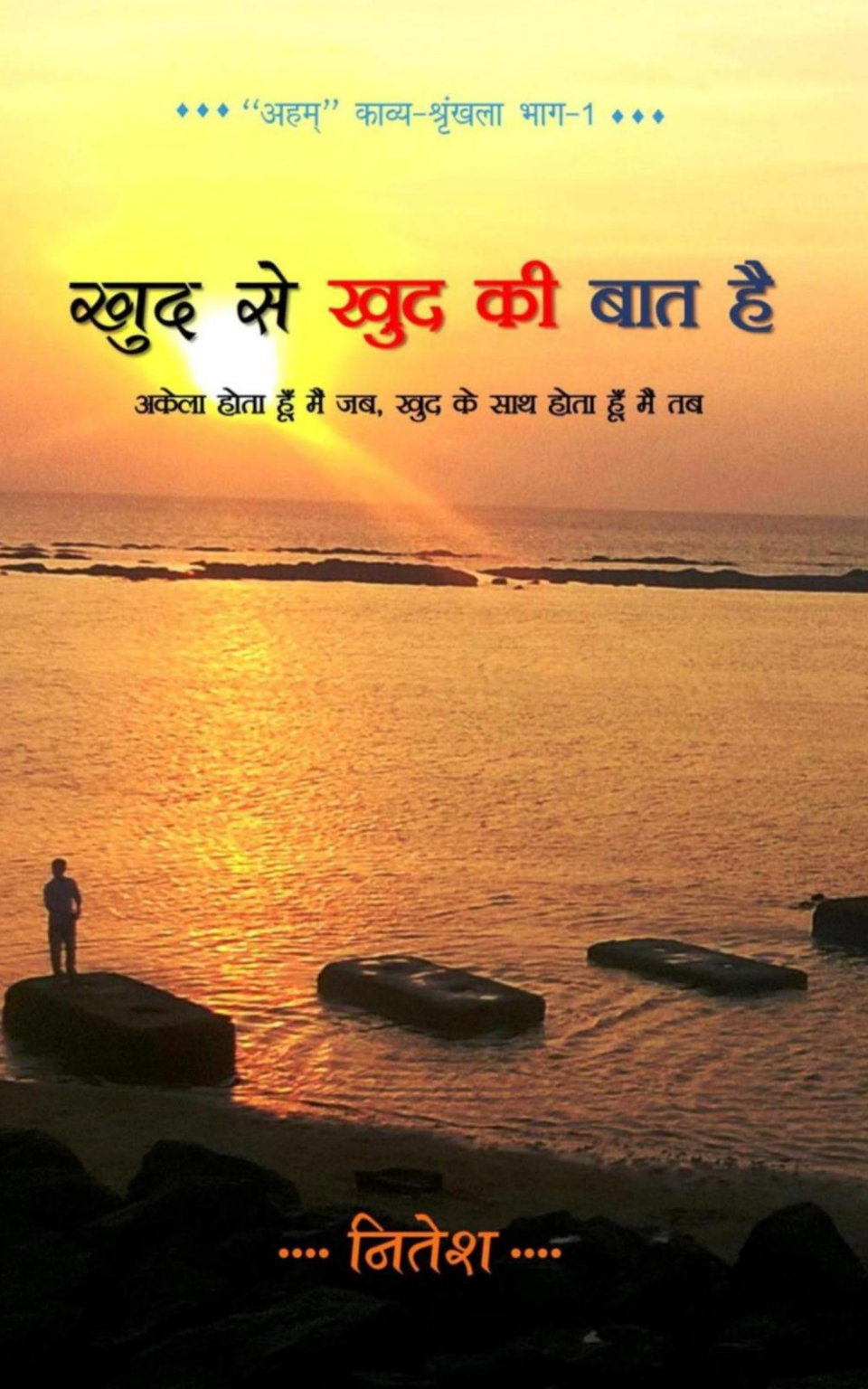

.... नितेश ....

खुद से खुद की बात है

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Nitesh Patidar, 2016 Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:978-93-6026-625-7

Price: ₹ 217.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

खुद से खुद की बात है

'अहम्' काव्य-श्रृंखला भाग-1

नितेश

• • अर्पण • •

मेरी दादीजी श्रीमती नन्दीदेवी
और
दादाजी श्री रामसुखजी के लिए

"आप दोनों की उम्र बरसों में हो इतनी,
इस रचना में शब्दों की संख्या है जितनी।।"

एक प्रार्थना

सभी के लिए। खुद के लिए।

ॐ असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतम् गमय।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

हे ईश्वर!
मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो।
अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो।
मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

- यजुर्वेद (बृहदारण्यक उपनिषद् 1.3.28)

◆ ◆ ◆ कृतज्ञता ◆ ◆ ◆

सपने अक्सर अकेले ही देखे जाते हैं, किन्तु उन्हें अकेले पूरा कर पाना संभव ही नहीं है। इस रचना को आप तक पहुँचाने की प्रक्रिया कई दिनों तक चलने वाला एक त्यौहार था, जिसे मेरे साथ मेरे कई अपनों ने मनाया और अपनी मेहनत से सफल बनाया।

मेरी दुनिया, मेरे माँ-पापा श्रीमती बालकुँवर देवी और श्री बालकिशन पाटीदार एवं मेरा पूरा परिवार; जिन्होंने प्रतिदिन मुझे उत्साहित किया और कई बार विपरीत परिस्थितियों में मार्गदर्शन किया।

मेरी स्कूल टीचर श्रीमती सुशीला जैन का विशेष आभार, जिन्होंने बचपन से ही मेरी भाषाओं को इस योग्य बनाया कि आज मैं यह रचना लिख पाया हूँ।

मेरा छोटा भाई अंकित, जो सकारात्मक और उत्साहवर्धक माहौल बनाए रखने में सदैव मेरा साथ देता रहा।

मेरी दोस्त मणि रंजिता शर्मा और राशि कासलीवाल, जिन्होंने मुझे इस काव्य संग्रह को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। मेरे मित्र कान्हा चतुर्वेदी, जिन्होंने हम तीनों के साथ मिलकर इस संकलन में मेरे शब्दों को सजीव चित्रों का रूप दिया। पुस्तक के आकर्षक आवरण पृष्ठों, पुस्तक के शीर्षक, विज्ञापन हेतु सुझावों और वेबसाइट डिज़ाइन के लिए इन सभी के साथ-साथ कृति गुप्ता, वीरेंद्र पाटीदार और मेरे कई दोस्तों का सहयोग रहा। सभी ने मुझे कई बार असमंजस की परिस्थितियों से बाहर निकाला। ऑफिस के कई साथियों का भी धन्यवाद, जिन्होंने लेखन के लिए हमेशा मेरा उत्साहवर्धन किया।

मेरे चचेरे भाई अंकित पाटीदार को ऑडियो-वीडियो ट्रेलर डिज़ाइन के लिए और दिव्या फ्रांसिस को उनके संगीत और आवाज़ के लिए आभार।

Educreation Publishing टीम, विशेषकर शोभा खाण्डे, विक्रम सिंह ठाकुर, राहुल राव और डिज़ाइन एवं सम्पादकीय टीम का आभार।

सभी पुस्तक विक्रेताओं का हृदय से धन्यवाद, जिनके प्रयासों से यह रचना अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँच पाई।

मेरे उन सभी शुभचिंतकों का भी शुक्रिया, जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मेरे इस प्रयास में अपना अमूल्य योगदान दिया।

साथ ही आप सभी पाठकों का भी आभार, जिन्होंने मेरी पहली ही रचना में मुझ पर विश्वास दिखाया।

अंत में श्री महाकाल! भगवान शिव का धन्यवाद, जिन्होंने अपनी कृपा से मुझे इस योग्य बनाया कि मैं अपने भावों को शब्दों का रूप दे पाया।

- **नितेश**

"अहम्" काव्य-श्रृंखला और "खुद से खुद की बात है"

'अहम्' (हिन्दी में अर्थ-'मैं') श्रृंखला की पहली रचना "खुद से खुद की बात है" ना सिर्फ कविताओं, शायरियों और गीतों का संकलन है, बल्कि यह हर कविता के प्रारम्भ की एक कहानी भी संजोए हुए है। लेखक ने यह समझाने का प्रयास किया है कि कैसे हर एक कविता शुरू हुई और उसके उद्भव का कारण क्या है, ताकि पढ़ते समय वह दृश्य बरबस ही पाठक की आँखों के सामने बनता चला जाए। इसलिए प्रत्येक कविता से पहले उसकी भूमिका लिखी गई है। कवि और लेखक दोनों की ही पृष्ठभूमियों पर साथ-साथ खड़े रहकर जीवन के सभी रंगों पर काव्य रचनाएँ की गई हैं। प्रेम, मिलन, विरह, धर्म, देश, समाज, परिवार, विज्ञान, कर्मण्यता, सत्य, तथ्य, सजीव, निर्जीव, आम आदमी पर, आप पर, खुद पर और विभिन्न विषयों पर काव्य रचनाएँ इस संकलन में निहित हैं।

कविताओं, शायरियों और गीतों के इस संकलन "खुद से खुद की बात है" को मूलतः 6 खण्डों में विभाजित किया गया है।

पहले खण्ड में उन कविताओं को सम्मिलित किया गया है, जो आत्म-केंद्रित है और खुद से खुद की बातों पर आधारित हैं।

दूसरे खण्ड में सकारात्मक और प्रेरित करती हुई कविताएँ हैं। लेखक ने विज्ञान, धर्म और जीवन तीनों में एक सामंजस्य समझाते हुए उन पर प्रेरक रचनाएँ की है।

तीसरे खण्ड में श्रृंगार और शांत रस की रचनाएँ हैं, अर्थात् प्रेम, मिलन और विरह पर आधारित काव्य रचनाएँ इसमें निहित है।

चौथे खण्ड में समाज, परिवार और रिश्तों पर आधारित रचनाएँ संकलित की गई हैं। समाज के अलग-अलग रूपों को दिखाती रचनाएँ।

पाँचवें खण्ड में उन कविताओं का समावेश है, जो सच्ची, तथ्यपूर्ण और कड़वी बातें करती हैं। सत्य को कल्पना के साँचे में ढालने का एक प्रयास।

अंतिम खण्ड उन हास्य कविताओं का संकलन है, जो तीखे और करारे किन्तु सच्चे और व्यवहारिक व्यंग्य हैं।

इस संकलन में लेखक का सबसे महत्वपूर्ण प्रयास यह रहा है कि उपन्यास, कहानियों और अन्य गद्य (Prose) विधाओं की तरह ही पद्य (Verse), कविताएँ और शायरियाँ भी आम आदमी की रूचि का विषय बन सकें। लेखक ने कठिन शब्दों का अर्थ समझाने के लिए अंग्रेजी के बोलचाल में प्रयोग होने वाले शब्दों का प्रयोग भी किया है, क्योंकि उर्दू की तरह ही अंग्रेजी के कुछ शब्द भी हिन्दी बोली का अंग बनने लगे हैं। यहाँ भाषा के जानकारों के लिए भी कविताएँ हैं और आम पाठकों के लिए भी। उनके लिए भी जिन्होंने अभी-अभी काव्य पढ़ना और लिखना शुरू ही किया है और उनके लिए भी जो अपनी धुनों और संगीत के लिए किसी गीत की तलाश में हैं। जिन्हें सिर्फ गद्य पढ़ना अच्छा लगता है, उनके लिए भी काव्य को रुचिकर बनाने का विशेष प्रयास किया गया है। कविताओं को प्रस्तुत करने, उन्हें पढ़ने, गुनगुनाने और उनसे बातें करने का एक अलग प्रयास।

यह आपकी बात है, सबकी बात है, खुद से खुद की बात है।

◆ ◆ ◆ खुद के साथ बने रहिये ◆ ◆ ◆

लेखक के बारे में

9 फरवरी को मध्यप्रदेश के भानपुरा (मन्दसौर) में जन्मे नितेश पाटीदार पेशे से डिज़ाइन इंजीनियर और अब एक लेखक भी है। इनके पिता एक वरिष्ठ वकील है और कृषि इनका पारिवारिक व्यवसाय है। नितेश वर्तमान में दिल्ली में रहकर नौकरी के साथ ही 'बौद्धिक सम्पदा अधिकार' (IPR) विषय में उच्च शिक्षा ले रहे हैं। इस समय वह इस संकलन के श्रव्य-काव्य (Audio Poems) और "अहम्" काव्य-श्रृंखला के दूसरे भाग काम कर रहे हैं। साथ ही वैदिक भारत के विज्ञान और पुराणों की सम्मिलित पृष्ठभूमियों पर आधारित अपने पहले उपन्यास पर भी काम कर रहे हैं।

Facebook और Twitter पर नितेश आपसे जुड़े हुए हैं और आप सभी पाठकों की आवाज़ में रिकॉर्ड की गई कविताओं की प्रतीक्षा में है। तो भेज दीजिए इस संकलन की कविताएँ खुद की आवाज़ में, उनके ईमेल authorniteshpatidar@gmail.com पर।
इस पुस्तक के बारे में अपनी राय और आने वाली कविताओं के लिए विषयों का सुझाव भी दीजिए, ताकि भाग-2 को आपके लिए और अधिक रुचिकर बनाया जा सके।
कुछ कविताओं के सैंपल आप YouTube पर भी सुन सकते हैं। लेखक और उनकी टीम से संपर्क करने और अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट www.niteshpatidar.com पर बने रहिए।

संकलन

खंड- 1

मत छुपा अब 1
आम आदमी हूँ 3
चुप रहना ही बेहतर है मेरा 5
शब्द मेरे दोस्त 6
कहानी हूँ मैं 7
यादों का एक थैला 8
रंगों वाली ख़्वाहिश 10
मैं लिखता नहीं पकाता हूँ 11
खुद से खुद की बात 12
अच्छा लगा आज 13
ज़िन्दगी- एक रेलगाड़ी 15
यादें क्रिकेट की 16
मेरे छोटे शब्द 18

खंड- 2

सब्र कर ज़रा 20
क्या गलत क्या सही 22
जिंदगी- एक नन्हा पौधा 24
मति के तीन नियम 26
राम सा क्या खोया? 28
तक़दीर लिखने लगा हूँ 30

कुछ नया करो 32
शाबाशी 34
हारे हो जीतकर 35
आरोही-अवरोही 37
ऊर्जा संरक्षण का नियम 39
आओ राष्ट्रनिर्माण करें 41
इतिहास बन जाओ 44
शिव बनो 46
मैं और मेरी 48
बीच समंदर कश्ती पर 50
खुदा हो गया हूँ 51
आकर्षण का सिद्धांत 52

खंड- 3

फिर से तुम्हारी बात है 54
कहानी जो अधूरी है 57
फिर याद कर लूँ 58
दूर-दूर एक-एक 60
सूखी घास पर सावन 61
बिछोह 63
रोको ना मुझे इस बार 64
सुहाना पतझड़ 65
ना जाने क्या इस बार हुआ 66
नीम और गुलमोहर 69
अपना बना लूँगा 71
वापसी 73
तुम्हें सोचा तो ये हुआ 74

आओ बातें करें 76
रात का सफ़र 78
वह लड़की 79
मुझे छेड़ती है 80
आँखें जो झुकी 82
ज़ुल्फ़ों का रंग 83
क्यों? 84
असमंजस 85

खंड- 4

बड़े पड़ोसी 86
बधाई हो 87
दादाजी 89
माँ- एक पूर्णता 91
पापा जैसा हूँ 93
उनसे बना हूँ 94
बहन 95
मैं तो सीख गई 96
दहेज का गणित 98
ऐसे हालात क्यों? 100
लौटा दे 101
मैं रिक्शेवाला 103
हम हो जाएँ 104
बताओ कहाँ गई 106
आओ मनुज फिर एक बार 107

खंड- 5

देखा है मैंने 109
अनंत में हम 110
कुदरत की समानता 112
आँकड़े सच बोलते हैं 114
क्या-क्या है 117
मैं किसान हूँ 118
जलयुद्ध 120
बरस जा वहाँ 122
मैं मृत्यु हूँ 123
बोडमास का नियम 125

खंड- 6

वैधानिक चेतावनी 127
आराम करो 130
पढ़े-लिखे समझदार! 132
वक्त के पाबन्द 134
सड़क के खरीददार 136
एक मुफ़्त की सलाह 138
अंत में एक शुरुआत 140

◆ ◆ ◆

खुद से खुद की बात है

जब अकेला होता हूँ, तब स्वयं को अपने ही साथ पाता हूँ। क्योंकि भीड़ में तो मैं खुद को छिपाने की कोशिश में ही लगा रहता हूँ। अकेले में सामना होता है खुद से, उस सच से जो सिर्फ मैं ही जानता हूँ। तब करता हूँ मैं खुद से खुद की ही बात। ऐसा आपके साथ नहीं होता? होता है न! तो अब आप अकेले नहीं हैं। आपसे बातें करती कुछ कविताएँ हैं, जिन्दगी के हर रंग से भरी हुई। कुछ गीत है आपकी अपनी ही धुनों के इंतजार में। कुछ शायरियाँ हैं, जो सच बोलकर आइना दिखा जाती हैं। इस सचित्र संकलन में प्रत्येक रचना से पहले उसकी भूमिका (Preface) स्पष्ट की गयी है, ताकि आप उस कविता के अस्तित्व में आने के कारण को समझकर स्वयं को उसके साथ जोड़ सके। पद्य (Verse) और गद्य (Prose) दोनों की ही पृष्ठभूमियों पर, एक साथ खड़े रहकर यह पुस्तक आप सभी के लिए लिखी गई है। प्रत्येक पृष्ठ पर आप स्वयं को लेखक से बात करते हुए पाएँगे। तो फिर आइये! कहिये अपनी बात उससे, क्योंकि ये आपकी बात है.. "खुद से खुद की बात है" बातूनी कविताओं की एक नयी शुरुआत है।

उज्जैन से ग्रेजुएशन करने के बाद पेशे से डिजाइन इंजीनियर नितेश पाटीदार, वर्तमान में दिल्ली में कार्यरत है। साथ ही "अहम्" काव्य-श्रृंखला के अगले भाग-२ और एक उपन्यास पर भी काम कर रहे हैं।

To know more about Nitesh, you can visit at-

Web: www.niteshpatidar.com
Facebook: www.facebook.com/nitesh.fanpage
Twitter: www.twitter.com/author_nitesh
Email: contact@niteshpatidar.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-93-6026-625-7
9 789360 266257